बी॰ए॰ स्नातक सेमेस्टर - I
विषय- संस्कृत, MJC- I

लकार परिचय

क्रियाओं के विविध कालों के बोधक उत्मनेपद अथवा परस्मैपद में प्रयोग होने वाली धातु के रूपों का किसी वर्ग-विशेष तथा किसी लकार विशेष के द्वारा ज्ञात होना ही लकार कहलाता है। वस्तुतः लकार क्रिया की काल से सम्बन्धित विशेषताओं को सूचित करने वाली प्रक्रिया है- संस्कृत भाषा में दस प्रकार के लकार होते हैं। जो निम्नलिखित हैं-

1. लट् लकार वर्तमानकाल
2. लृट् लकार भविष्य काल

३. लुट् लकार — अनद्यतन भविष्यत् काल
४. लृट् लकार — हेतु हेतुमद् भविष्यत् काल
५. लङ् लकार — भूतकाल
६. लिट् लकार — परोक्ष भूतकाल
७. लोट् लकार — आज्ञावाचक
८. विधिलिङ् लकार — चाहिए के अर्थ में प्रयुक्त
९. आशीर्लिङ् लकार — आशीर्वाद के लिए प्रयुक्त
१०. लुङ् लकार — सामान्य भूतकाल

अनुवाद के लिए सामान्यतः प्रस्तुत पाँच लकारों की ही आवश्यकता पड़ती है।

	लकार	अर्थ	पहचान
१.	लट् लकार	वर्तमान काल	ता है, ती है, ते हैं।
२.	लङ् लकार	भूतकाल	या, यी, ये, या, ये, यी।
३.	लृट् लकार	भविष्य काल	गा, गी, गे।
४.	लोट् लकार	आज्ञार्थक काल (Imperative Mood)	आज्ञा के अर्थ में
५.	विधिलिङ् लकार	चाहिए के अर्थ में (Potential Mood)	चाहिए के अर्थ में

(1) लट् लकार (वर्तमान काल) - जब किसी वाक्य के अन्त में ता है, ती है तथा ते हैं आते हैं तो वहाँ लट् लकार (वर्तमान) का प्रयोग होता है।
यथा - वह खेलता है। - सः क्रीडति।
बालक दौड़ते हैं। बालकाः धावन्ति।

(2) लङ् लकार (भूतकाल) - जब किसी वाक्य के अन्त में या, यी, ये अथवा

था, थी, थे आदि आते है तो वहाँ लङ् लकार (भूतकाल) का प्रयोग होता है।
जैसे- मैं विद्यालय गया था। अहं विद्यालयमगच्छम्।

(3) लृट् लकार (भविष्य काल)- जब किसी वाक्य के अन्त में गा, गी, गे का प्रयोग किया जाता है तो वहाँ लृट् लकार का प्रयोग किया जाता है।
जैसे- वह पूजा करेगी। सः अर्चनां करिष्यति।
मैं कल गाँव जाऊँगी। अहं श्वः ग्रामं गमिष्यामि।

(4) लोट् लकार (आज्ञार्थक)- जब किसी वाक्य में आज्ञा, अनुमति, प्रार्थना, आशीर्वाद व इच्छा प्रकट की जाती है तो वहाँ लोट् लकार होता है।
यथा- तुम पढो। त्वं पठ।
पिता को देवता मानो। पितृदेवो भव।

(5) विधिलिङ् लकार (चाहिए के अर्थ में)- जब किसी वाक्य के अन्त में 'चाहिए' शब्द का प्रयोग होता है तो वहाँ विधिलिङ् लकार का प्रयोग होता है।
यथा- तुम्हें पढना चाहिए। त्वं पठेः।
सदा सत्य बोलना चाहिए। सदा सत्यं वदेत्।
॥इति॥

डॉ० ओम प्रकाश आर्य
महाराजा कॉलेज, आरा।